भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 2084
गुरुवार, 06 अगस्त, 2026 को उत्तर देने के लिए

जम्मू और कश्मीर में इसरो-समर्थित अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग

2084. श्री गुलाम अली:

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने पिछले पांच वर्षों के दौरान संघ राज्यक्षेत्र जम्मू और कश्मीर में उपग्रह-आधारित अनुप्रयोग और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी कार्यक्रम लागू किए हैं;

(ख) आपदा प्रबंधन, कृषि, बागवानी, जल संसाधन, शहरी नियोजन, सीमा प्रबंधन और पर्यावरण निगरानी के लिए इसरो के माध्यम से शुरू की गई परियोजनाओं का ज़िला-वार ब्यौरा क्या है;

(ग) लाभार्थी विभागों और कार्यान्वयन करने वाले अभिकरणों सहित संस्वीकृत, जारी और उपयोग की गई निधि का वर्ष-वार ब्यौरा क्या है; और

(घ) क्या सरकार जम्मू और कश्मीर के शैक्षणिक संस्थानों और दूर-दराज़, सीमावर्ती और जनजातीय ज़िलों में उपग्रह संचार, रिमोट सेंसिंग, भू-स्थानिक सेवाओं और क्षमता-निर्माण कार्यक्रमों का विस्तार करने का विचार रखती है?

उत्तर

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय
तथा प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री
(डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

****

(क) जी हां। इसरो/ अंतरिक्ष विभाग ने पिछले पांच वर्षों के दौरान संघ राज्य क्षेत्र जम्मू और कश्मीर में अनेक उपग्रह-आधारित अनुप्रयोग और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी कार्यक्रम लागू किए हैं। प्रचालित संचार उपग्रहों में से 12 उपग्रह संघ राज्य क्षेत्र जम्मू और कश्मीर को कवर करते हैं। यह क्षमता दूरसंचार तथा ब्रॉडबैंड संयोजकता की आवश्यकता को पूरा करने तथा उसके संवर्धन हेतु विविध सेवा प्रदाताओं को प्रदान किए जाते हैं।

(ख) इसरो/ डीओएस ने जम्मू और कश्मीर में आपदा प्रबंधन, कृषि, जल संसाधन, शहरी नियोजन तथा पर्यावरण की निगरानी के लिए निम्नलिखित परियोजनाएं शुरू की हैं:

- उपग्रह का उपयोग करके भू-स्खलनों के मापन; और ग्राम-वार भू-स्खलन की चेतावनी

के लिए उपग्रह समेकित भू-स्खलन आकलन तथा चेतावनी प्रणाली (एसआईएलएएएस) परियोजना (इसरो – डीएमएसपी के अंतर्गत)।

- जम्मू और कश्मीर के सभी जिलों को कवर करते हुए वर्ष 2023 के मानसून ऋतु के लिए भू-स्खलन वाली सूची का मानचित्रण।
- राष्ट्रीय जलविज्ञान परियोजना के अंतर्गत, जम्मू और कश्मीर के लिए हिमनद झीलों की सूची तैयार की गईं है, और सिंधु नदी बेसिन में मुंडीकसर झील के लिए हिमनद झील विस्फोट बाढ़ (जीएलओएफ) खतरा तथा जोखिम संबंधी मानचित्र तैयार किए गए।
- अनंतनाग, बांदीपोरा, बारामूला, बडगाम, डोडा, गांदरबल, जम्मू, कठुआ, किश्तवार, कुलगाम, कुपवारा, पुंछ, पुलवामा, राजौरी, रामबन, रियासी, सांबा, शोपियां, श्रीनगर एवं उधमपुर जिलों को कवर करते हुए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकीयों का उपयोग करके समेकित जलविभाजक प्रबंधन कार्यक्रम (आईडब्ल्युएमपी) की निगरानी।
- अनंतनाग, बांदीपोरा, बारामूला, बडगाम, डोडा, गांदरबल, जम्मू, कठुआ, किश्तवार, कुलगाम, कुपवारा, पुंछ, पुलवामा, राजौरी, रामबन, रियासी, सांबा, शोपियां, श्रीनगर एवं उधमपुर जिलों को कवर करते हुए जलविभाजक विकास घटक की निगरानी – प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना (डब्ल्यूडीसी-पीएमकेएसवाई) 2.0 परियोजनाएं।
- शहरी जल निकाय सूचना प्रणाली (यूडब्ल्यूएआईएस) परियोजना (अमृत 2.0) के अंतर्गत अनंतनाग, जम्मू और श्रीनगर के लिए जल निकायों के मानचित्रण किए गए हैं।
- मनरेगा संबंधी क्रियाकलापों के नियोजन तथा निगरानी के लिए अनंतनाग, बांदीपोरा, बारामूला, बडगाम, डोडा, गांदरबल, जम्मू, कठुआ, किश्तवार, कुलगाम, कुपवारा, पुंछ, पुलवामा, राजौरी, रामबन, रियासी, सांबा, शोपियां, श्रीनगर एवं उधमपुर जिलों को कवर करते हुए जियो-मनरेगा परियोजना (चरण-II)।
- जम्मू विश्वविद्यालय के साथ जम्मू और कश्मीर के लिए आर्द्रभूमि सूची बनाना तथा आर्द्रभूमि का जिला-वार विश्लेषण; राष्ट्रीय आर्द्रभूमि सूचीकरण और मूल्यांकन (एमडब्ल्यूआईए)।
- मरुस्थलीकरण और भूमि क्षरणः कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर के साथ निगरानी, जोखिम आकलन और प्रतिरोधी योजना संबंधी परियोजना (2018-19): क्षेत्र में सूक्ष्म जलविभाजक हेतु भूमि क्षरण से निपटने के लिए कार्य योजना की तैयारी सहित कठुआ, बडगाम और उधमपुर हेतु स्थिति का मानचित्रण तथा जोखिम का आकलन।
- दीर्घकालीन पारिस्थितिकी अनुसंधान केंद्र (एलटीईआरएस) परियोजना (2021-2025): जम्मू और कश्मीर सहित उत्तर-पश्चिम हिमालय को कवर करते हुए जलवायु तथा पारिस्थितिकी प्रतिक्रिया अध्ययन।
- उच्च विभेदन उपग्रह डेटा की सहायता से भूमि उपयोग, बस्ती, मूलभूत ढ़ांचा तथा जल निकासी पर विषय आधारित सूचना सृजित करते हुए जम्मू और कश्मीर के सभी जिलों के लिए अपडेट (एसआईएसडीपी-यू) परियोजना।
- वर्ष 2020-21 के लिए 1:50,000 के पैमाने पर पांच-वर्षीय मूल्यांकन सहित वर्ष 2021-22 से 2024-25 तक 1:2,50,000 के पैमाने पर भूमि उपयोग/ भूमि आवरण के उपग्रह आधारित वार्षिक मूल्यांकन किए गए हैं।

(ग) लाभार्थी विभागों/कार्यान्वयन एजेंसियों सहित, वर्ष-वार संस्वीकृत, जारी तथा उपयोग की गई राशि का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	परियोजना	वर्ष	संस्वीकृत राशि	जारी की गई राशि	उपयोग की गई राशि	लाभार्थी/कार्यान्वयन एजेंसी
1	भूमि आवरण एवं भूमि उपयोग परियोजना (1:50,000 पैमाना) – प्रगति पर	2025-28	रु. 75.78 लाख	रु. 30.31 लाख	रु. 30.31 लाख	पारिस्थितिकी, पर्यावरण एवं सुदूर संवेदन विभाग, एसडीए कॉलोनी, बेमिना, श्रीनगर
2	एसआईएलएएएस (इसरो–डीएमएसपी बजट शीर्ष) – प्रगति पर	2023-28	रु. 50.16 लाख	रु. 23.36 लाख	रु. 23.36 लाख	जम्मू विश्वविद्यालय
3	डब्ल्यूडीसी-पीएमकेएसवाई 2.0 की निगरानी – प्रगति पर	2023-29	रु. 4.95 लाख	रु. 3.7 लाख	रु. 3.7 लाख	जम्मू विश्वविद्यालय
4	विकेन्द्रीकृत योजना हेतु अंतरिक्ष-आधारित सूचना सहायता – अद्यतन (एसआईएसडीपी-यू)	2019-24	रु. 220 लाख	रु. 220 लाख (कुल)	रु. 220 लाख	पारिस्थितिकी, पर्यावरण एवं सुदूर संवेदन निदेशालय (डीईईआरएस), जम्मू एवं कश्मीर
5	आईडब्ल्यूएमपी जल विभाजक निगरानी	2022-23	रु. 27.62 लाख	रु. 27.62 लाख	रु. 27.62 लाख	जम्मू विश्वविद्यालय
6	राष्ट्रीय आर्द्रभूमि सूचीकरण एवं मूल्यांकन	2018-22	रु. 11.43 लाख	रु. 5. लाख	रु. 5. लाख	जम्मू विश्वविद्यालय
7	मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण: निगरानी, जोखिम आकलन एवं नियंत्रण कार्ययोजना	2017-21	रु. 5.91 लाख	रु. 5.91 लाख	रु. 5.91 लाख	कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर

(घ) इसरो/अंतरिक्ष विभाग, उपग्रह एकीकृत भू-स्खलन आकलन एवं चेतावनी प्रणाली (एसआईएलएएएस) परियोजना के अंतर्गत जम्मू एवं कश्मीर के सभी जिलों को शामिल करते हुए प्रायोगिक भू-स्खलन पूर्वानुमान प्रणाली पर कार्य कर रहा है। इसरो समय-समय पर राज्य एवं केंद्रीय आपदा प्रबंधन संस्थाओं के लिए राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है, जिनमें राष्ट्रीय आपातकालीन प्रबंधन डेटाबेस (एनडीईएम) पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण भी शामिल है, जिसमें जम्मू एवं कश्मीर के प्रतिभागियों ने भी भाग लिया है।

इसरो ने जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू में सतीश धवन अंतरिक्ष विज्ञान केंद्र (एसडीसीएसएस) की स्थापना की है, जहाँ संकाय सदस्यों/शोधार्थियों को अधयन में सहायता प्रदान करने तथा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के प्रति उनकी समझ को बढ़ाने के उद्देश्य से इसरो की सुविधाओं तक पहुँच उपलब्ध कराई जाती है।

पीएम ई-विद्या कार्यक्रम के अंतर्गत उपग्रहों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा उपलब्ध कराई जा रही है। दूर-चिकित्सा कार्यक्रम के अंतर्गत जम्मू एवं कश्मीर क्षेत्र में टेलीमेडिसिन नोड स्थापित किए गए हैं। वर्ष 2024 में उच्च थ्रूपुट उपग्रह (एचटीएस) नामत: जीसैट-एन2 को शामिल किया गया, जिससे जम्मू एवं कश्मीर संघ राज्य क्षेत्र सहित देश में ब्रॉडबैंड संयोजकता को और सुदृढ़ बनाया गया।

****